

अद्भुत सी कहानी है यह एक शमशेर निडर बालक की,
लाखों का जो मसीहा बना उस क्रूर से दुर्लालक की,
ना बाप की ना गुरु की और ना किसी संचालक की,
खुद से जो खड़ी करी उसने, उस भीष्म रोग ज्वालक की।

मेरी कहानी के यह सारे, अहम से थे किरदार,
कुछ शत्रु है जीवन में जिनको मेरा है आभार।
एक जननी तीन बाप और कुछ पागल से यार,
एक थी ताई, एक लुगाई, और दो सच्चे थे प्यार।

तीनों बापों ने मुझे दी अलग अलग से ज्ञान,
पहला बोला, जीवन में शालीनता है महान,
दूजे ने सिखाया कि बस शक्ति में है शान,
तीजे ने बतलाया, जीवन अर्थ है बलिदान।

माता को मार दिया मैंने, पिता को कारागार दिया,
दुनिया को शालीनता दिखाई तो उसने मुझे नकार दिया,
तब शक्ति पाने के खातिर मैंने सब कुछ अपना वार दिया,
फिर मांस, मदिरा, तामस धारा, ने मेरे जीवन को आधार दिया।

धीरे धीरे बढ़ा हुआ मैं जीत लिया आवाम,
भाई भाऊ सुनने में एक विचित्र सी थी शान,
पता नहीं जिस से नफरत था कैसे बना अभिमान,
पर अब यह मेरा शहर था, बंबई मेरी जान।

पर किस्मत ने मेरी खेली एक बहुत ही गंदी दाव,
अंधेरे में बंद किया ना दिखे स्वयं की छाव,
पता चला, जब भागा घर से निकला था नंगे पांव,
और आज अकेला मैं खड़ा था बीच समंदर नांव।

फिर नई जगह पर नए सिरे से बिल्कुल नया व्यापार था,
पर मन में खुशी नहीं थी मेरी क्योंकि मैं बंबई का हकदार था।
छोड़ चला मैं वहां, जहां बस शांति का अंबार था,
और वहां मिला मैं गुरुदेव से जहां बदला मेरा विचार था।

यह आदि है यह अंत है जीवन का यह हेमंत है,
जिसके पंत में ही बसंत है वह व्यक्ति ही सुमंत है।
जो आद्यंत से ही गुणवंत है केवल संत एक महंत है,
अत्यंत यह चक्रदंत है, तुरंत नहीं पर अंत है।

गुरुजी के समीप जाने को किया मैंने प्रयास था,
पर अचानक पता चला कि यह सारा कुछ बकवास था,
उनकी स्मृति से, मानव विकास का उपाय ही विनाश था,

भाग चला मैं वहां से क्योंकि बचाना मुझे अपना निवास था।

बेजार है लाचार है संसार एक व्यापार है,
इस विश्व का रक्षक भी तो एक वीर सा सरदार है।
उलझे हुए इस रंगमंच का वह भी एक किरदार है,
अब क्या होना है विश्व का, बस उस पर ही यह भार है।

एक अकेला मैं चला था विश्व दुख संधार करने,
जैसी भी पापी हो दुनिया इसको हृदय से प्यार करने,
शार्दूल जो है व्याकुल जो है, यह दिन धरा निस्तार करने,
पावन छवि निर्मल वचन से विश्व का श्रृंगार करने।

जो प्यार किया धोखा मिला, तो जा रहा हूं प्यार से।
हथियार ने सब कुछ छीना, तो जा रहा हूं हथियार से।
हर इकरार में एक दर्द है, तो जा रहा हूं इकरार से।
बंबई भाग्य अब तेरे हवाले मैं जा रहा हूं संसार से।

मेरी छोटी सी कहानी का यही अंजाम है,
दुनिया में भाई कहलाया गणेश मेरा नाम है।
जो भी हो, जैसा भी हो, विधि का यही विधान है,
कभी-कभी तो लगता है, कि अपुन-इच भगवान है।

-बिधान आर्य